५९

… महावीर ग्रंथमाला पुष्प ४

तामिल भाषा का जैन साहित्य

[कुछ महत्त्व पूर्ण ग्रंथों का संक्षिप्त परिचय]

SHRI AILAK PANNALAL D. JAIN SARASVATI BHAVAN * JHALRAPATAN CITY *

लेखक—

श्री सी० ऐस० मल्लिनाथन्

अनुवादक—

श्री भंवरलाल पोल्याका

दो शब्द

सत्साहित्य की तरह संसार में कोई टिकने वाला पदार्थ
ीं है। हमारे पूर्वजों से जो कुछ हमने पाया है उसमें सर्वाधिक
यवान वस्तु साहित्य ही है। साम्राज्य और राज्य, नगर और
बने और बिगड़े। वे मनुष्य भी दुनियां में न रहे जिन्होंने
वन की विभिन्न दिशाओं में अपने आपको पुरस्कृत और
यात किया। हमारे आचार्यों ने जो मूल्यवान साहित्य लिखा
का बहुतसा हिस्सा नष्ट हो जाने के बाद भी हमें हमारे
ाज्य से जो कुछ प्राप्त हुआ है वह हमें इस लोक और परलोक
सुखी, समृद्ध और पवित्र बनाने के लिए पर्याप्त है। इस साहित्य
द्वारा हम संसार के गहनांधकार को भेदकर सुख का त्रिकाला-
धित मार्ग ढूंढ सकते हैं।

"बिना साहित्य का जीवन मृत्यु है, यह पुरानी कहावत है।
ई राष्ट्र और कोई समाज साहित्य के बिना जिन्दा नहीं रह
कता। साहित्य के बिना राष्ट्र एवं समाज की कल्पना ही असंभव
। Thomas Carlyle कहता है कि Christianity lives because
the Bible अर्थात् ईसाई धर्म के जीने का कारण बाईबिल है।
गर बाईबिल न होती तो ईसाई धर्म कभी जीवित नहीं रहता।

इसी तरह जैनधर्म के जिन्दा रहने के कारण उसके आचार्यों

द्वारा लिखे हुए पवित्र शास्त्र ही हैं। देश की सभी भाषाओं में जैन ग्रंथकारों के द्वारा लिखा हुआ कीमती साहित्य मौजूद है।

ईसाई धर्म प्रारंभ में एक बहुत ही साधारण स्थिति में था। पर आज वह संसार के प्रत्येक कोने में व्याप्त हो रहा है। इसकी पवित्र पुस्तक बाईबिल संसार की एक हजार भाषाओं से भी अधिक में अनूदित होकर प्रकाशित हो चुकी है।

जैनों के ग्रंथ कितनी भाषाओं में अनूदित हुए इस प्रश्न का उत्तर इस प्रश्न की प्रतिध्वनि के अतिरिक्त और क्या हो सकता है? अगर जैन धर्म को जिन्दा रहकर संसार को मुक्ति का मार्ग बतलाना है तो इसका साहित्य प्रकाशित होकर संसार में वितरण किया जाना चाहिए।

कुछ समय तक नये मंदिर बनाना, महोत्सव करना, मेला भराना और सभा समितियों की योजना करना आदि बन्द कर उस पैसे को यदि हम साहित्य प्रकाशन और उसके प्रचार में लगावें तो इससे जैन धर्म की वास्तविक प्रभावना होगी। हमें एक ऐसी केन्द्रीय साहित्य-प्रकाशन संस्था खोलने की अत्यंत आवश्यकता है जो सभी भाषाओं के महत्त्वपूर्ण जैन साहित्य का अनुसंधान करे, उसे प्रकाश में लावे और संसार की विभिन्न भाषाओं में उसका अनुवाद कर उसका प्रचार करे।

हमारे शास्त्रों ने शास्त्र दान की बहुत महिमा गाई है। जो इसके लिए अपने द्रव्य का सदुपयोग करता है वह कैवल्य लक्ष्मी

का धनी होता है। एक तामिल कथा हमें बतलाती है कि एक धर्मात्मा आदमी जिसने एक मुनि को शास्त्र दान दिया था, वही अपने दूसरे जन्म में भगवान कुंदकुंद हुआ।

इस छोटी सी पुस्तिका में जैन मनीषियों के द्वारा तामिल भाषा में लिखे हुए जैनों के कुछ महत्त्वपूर्ण ग्रंथों का परिचय दिया गया है। तामिल भाषा का बहुतसा जैन साहित्य यद्यपि नष्ट हो गया है, फिर भी जो कुछ बचा है वह हमारे धर्म और हमारे महान ऋषियों की महत्ता को घोषित करने के लिए पर्याप्त है। यह जैनों का कर्त्तव्य है कि वे इसे प्रकाशित करावें और इसका अधिकाधिक प्रचार करें। ऐसे पवित्र कार्य के लिए व्यय कीगई प्रत्येक पाई अपने वास्तविक सदुपयोग में जावेगी। इससे दाता को अमरकीर्ति प्राप्त होगी और परलोक में आनंद मिलेगा।

जैन संस्कृत कालेज
जयपुर
२८ फरवरी १९५१

—चैनसुखदास रावका

LALA PANNALAL JAIN SARASWATI BHAVAN
JHALRAPATAN CITY

तामिल भाषा का जैन साहित्य

तामिल साहित्य का प्राचीनतम, श्रेष्ठ एवं सर्वाधिक मूल्यवान अंश जैनियों की देन है। व्याकरण, कोष, महाकाव्य, छंद, समाज-विज्ञान, गणित, ज्योतिष, खगोल और आयुर्वेद आदि तामिल साहित्य के प्रायः सब ही विषयों में केवल जैन ग्रंथ ही अधिक प्रसिद्ध हैं और इन ग्रंथों के ही प्रमाण संबंधित विषयों पर उद्धृत किये जाते हैं।

धार्मिक उपद्रवों के समय बहुत सा जैन शास्त्र-संग्रहालय नष्ट हो गया। जो कुछ शेष रहा उसमें से निम्न लिखित साहित्य प्रकाशित हो चुका है।

व्याकरण—

१—तोल्काप्पियम्—श्री तोल्काप्पिय देव द्वारा रचित यह ग्रंथ दो सहस्र वर्ष से भी अधिक प्राचीन है। इसके तीन अध्यायों में १६१२ सूत्र हैं जिनमें वर्ण, शब्द और पदार्थों का वर्णन है। पदार्थ संबंधी (Porul) तृतीय अध्याय में भूमि की विभिन्न जातियों, वहां के निवासियों, उनकी मान्यताओं, उनके रीति रिवाज एवं पद्धतियों, भूमि की उपज और जीवों के एकेंद्रियादिक भेद आदि के संबंध में बहुमूल्य विस्तृत सूचनाएँ हैं। इस ग्रन्थ

की पांच टीकाएं हैं। सर्वाधिक प्राचीन टीका जैनाचार्य श्री इलमपूरनर द्वारा लिखित है। ये आचार्य केवल 'टीकाकार' के नाम से भी विख्यात हैं। यह टीका सर्वाधिक प्रामाणिक मानी जाती है; किन्तु यह अभी तक प्रकाशित नहीं हुई है। इसका प्रकाशन अत्यन्त आवश्यक है।

२. नन्नूल—इस ग्रन्थ के रचयिता नदीसंघ के आचार्य श्री भवनंदि हैं। श्री भवनंदि गंगावंश के राजा अमराभरण सीयगंगा के गुरु थे। राजा की प्रार्थना पर ही इस व्याकरण का निर्माण हुवा था। तामिल भाषा का यह अत्यन्त लोकप्रिय व्याकरण है। और तामिल देश के सम्पूर्ण विद्यालयों और महाविद्यालयों में पाठ्य पुस्तक के रूप में नियत है। सम्मान और महत्त्व में तोल्काप्पियम् के बाद इसका स्थान द्वितीय है। तामिल भाषा का कोई भी छात्र इसके थोड़े बहुत ज्ञान के बिना स्कूल अथवा विश्वविद्यालय की कोई भी परीक्षा पास नहीं कर सकता।

३. नेमिनाथम्—कालिंदी के श्री वच्छनंदी आचार्य के शिष्य श्री गुणवीर पंडित इस ग्रंथ के निर्माता हैं। मैलापुर के भगवान नेमिनाथ के मंदिर में इसका निर्माण होने के कारण इस ग्रंथ का यह नाम है। प्रारंभिक पद्यों से यह साफ है कि इसका निर्माण-सामुद्रिक लहरों द्वारा मंदिर के ध्वस्त होने से पूर्व हुवा था। अतः इसका रचना काल ईसा की प्रथम शताब्दी से भी पूर्व माना जाना चाहिये। यह ग्रन्थ सुप्रसिद्ध वेण्बा छंदों में लिखा हुवा है। तामिल

छंद-शास्त्र में ये छंद अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं।

छंद शास्त्र—

४. याप्परुंगलकारिकै—श्री अमृतसागराचार्य द्वारा लिखित यह ग्रन्थ तामिल पिंगल साहित्य का एक प्रामाणिक ग्रन्थ है। इस पर श्री गुणसागर द्वारा विरचित एक बड़ी सुंदर टीका है। तामिल भाषा के बड़े बड़े विद्वान् और लेखक छंद शास्त्र के संबंध में प्रमाण स्वरूप इसके उद्धरण देते हैं। इसका निर्माण काल ईसा की नवीं शताब्दी है।

५. याप्परुंगल वृत्ति—श्री अमृतसागराचार्य द्वारा विरचित इस तामिल छंद शास्त्र के ग्रंथ पर भी श्री गुणसागर द्वारा विरचित एक टीका है। इस टीका में अन्य बहुत से जैन ग्रंथों के, जो अभी तक अप्राप्य हैं, उद्धरण हैं।

शब्द-कोष—

१. चूड़ामणि निघंटु—तामिल भाषा में इस ग्रन्थ को 'विरुत्तम' भी कहते हैं। उत्तरपुराण के कर्ता श्रीमद् गुणभद्राचार्य के शिष्य मंडल पुरुष ने नवीं शताब्दी में इस कोष की रचना की थी। तामिल भाषा का यह प्रसिद्धतर शब्द कोष है।

२. दिवाकर निघंटु—रचयिता श्री दिवाकर मुनि

३. पिंगल निघंटु—रचयिता श्री पिंगल मुनि

उपरोक्त दोनों ही ग्रन्थ प्राचीन हैं और इनकी रचना सूत्रों में है।

प्रबोधक (आचार और नीति शास्त्र संबंधी)

१. पवित्र कुरल्—तामिल भाषा के नीति शास्त्र संबंधी इस प्रसिद्ध ग्रन्थ में १३३ अध्यायों में १३३० कुरल् हैं। कुरल् शब्द का अर्थ छोटे पद (दोहा, सोरठा) है। इस ग्रंथ का निर्माण ईसा की प्रथम अर्धशताब्दी में पादिरीपुलीयूर अथवा दक्षिण पाटलिपुत्र नामक स्थान में मूल संघ के नायक श्रीमद् एलाचाय उपनाम श्री कुंदकुंदाचार्य द्वारा हुआ था। धर्म, अर्थ और काम का विवेचन इस ग्रंथ में है। धर्म के अध्याय में गृहस्थ और साधुओं के पालने योग्य नियमों का विस्तृत विवरण है। पुस्तक के दूसरे अध्याय में जीवन की आवश्यकताओं, राज्य संचालन तथा राजनीति का वर्णन है। तृतीय अध्याय में वास्तविक और अवास्तविक प्रेम का बड़ा ही सजीव चित्रण है। ऐसा कहा जाता है कि इस ग्रंथ पर १० महत्त्वपूर्ण टीकाएं थीं। सर्वाधिक प्राचीन टीका श्री धरुमर् अथवा धर्मसेन नामक जैन द्वारा लिखी गई थी जो वर्तमान में अप्राप्य है। इसकी अन्य तीन टीकाएं अजैनों द्वारा प्रकाशित की जा चुकी हैं। आज से अनुमान ५० वर्ष पूर्व डा० जी० यू० पोप ने इस ग्रन्थ का अनुवाद अंग्रेजी भाषा में किया था। पोप साहब ३० वर्ष से भी अधिक समय तक तामिल देश में रहे थे और उन्होंने तामिल भाषा की शिक्षा प्राप्त की थी। तामिल भाषा का व्याकरण भी उन्होंने लिखा था। कुरल् में वर्णित सम्पूर्ण नीति शास्त्र अहिंसा के उत्कृष्ट सिद्धांत पर आधारित है। मंगलाचरण के अतिरिक्त अन्य बहुत से आन्तरीय प्रमाण भी ऐसे हैं जिनसे यह

प्रमाणित होता है कि इस ग्रन्थ के निर्माता के जैनी होने में कोई संदेह नहीं है।

२. नालड़ियार्—पाण्ड्यराज्य निवासी भिन्न भिन्न जैन सन्तों द्वारा इस ग्रन्थ का निर्माण हुवा है। इस ही नाम के छंदों में यह ग्रंथ लिखा होने के कारण ही इस ग्रंथ का यह नाम है। नालड़ियार् का अर्थ है चौपदा अथवा चार पंक्तियों का दोहा अथवा सोरठा। इस ग्रंथ के प्रत्येक पद का निर्माण भिन्न भिन्न जैन मुनियों द्वारा हुआ है, ऐसा इसके अध्ययन से ज्ञात होता है। इसमें ४०० पद हैं और उनका संग्रह कुरल् की भांति ही एक निश्चित नीति के अनुसार किया गया है। इस ग्रंथ में भी धर्म, अर्थ और काम का ही वर्णन है और इस पर श्री पदुमनार् द्वारा विरचित एक बड़ी ही सुन्दर जैन टीका है। कुरल् और नालड़ियार दोनों से ही तामिल जनता के नैतिक एवम् सामाजिक दर्शन पर विस्तृत प्रकाश पड़ता है।

इन दो ग्रन्थ रत्नों, कुरल् और नालड़ियार् के संबंध में डा० पोप लिखते हैं:—

'इन काव्यों में निहित विचार मनुष्य को अपनी ओर खैंचने वाले हैं। नैतिक कर्तव्य की उत्कट अभिलाषा, धार्मिकता के प्रति तीव्र उत्कण्ठा, तेजोमय निःस्वार्थ उदारता और लक्ष्य की उच्चता ये मनुष्य को उठाने वाले विचार ही इन काव्यों की विशेषता है। मेरे विचार से जो मनुष्य मानव कर्तव्य के प्रति क्षुधा एवं तृषा

को उत्पन्न करने वाली तथा धार्मिकता को जगाने वाली चिंतनाओं का आदर करते हैं उनके लिए ये काव्य वरदान हैं, शक्ति के स्रोत हैं। ऐसे लोग भारतवासियों के शिरोमणि हैं और कुरल् एवं नालडियार् ने उनके निर्माण में मदद दी है।'

३. पालामोली अर्थात् लोकोक्तियां—रचयिता श्री मुन-रुरई अरयनार् नामक एक जैन नरेश। समय अष्टम शताब्दी। इसमें वेरुबा नामक ४०० पद हैं। प्रत्येक पद में एक लोकोक्ति अथवा मुहावरा है। ग्रन्थ से केवल चारित्र निर्माण संबंधी ही शिक्षा नहीं मिलती, वरन् उससे सांसारिक ज्ञान भी अत्यधिक मात्रा में प्राप्त होता है।

४ तिणई मालई नूट्रेम्बदु—रचयिता श्री कणिमेदावियार्। रचना काल-छठी शताब्दी। इसमें प्रेम, युद्ध, यात्रा आदि के सिद्धान्तों पर १५ श्लोक हैं।

५. नान-मणिक-कडिगई रचयिता श्री विलम्बी नाथर। इसके प्रत्येक पद में ४ गुण अथवा रत्नों का वर्णन है।

६. एलाती—इसका अर्थ है इलायची इत्यादि। रचयिता मदुरा के मक्कायनार के शिष्य श्री कणिमेदावियार। जिस प्रकार इलायची इत्यादि मसालों से शारीरिक रोगों की निवृत्ति होती है उसकी प्रकार इसके प्रत्येक पद्य में वर्णित शिक्षाओं द्वारा आत्मिक बुराइयां दूर होती हैं।

७. अरनेरीचारम् (धर्मपथ का सार)—रचयिता श्री तिरु-मुनई-पाड़ियार् । इस ग्रंथ में सम्यग्दर्शन, सम्यक्ज्ञान और सम्यक्चारित्र का एवं अणुव्रतों का बड़ा ही सुन्दर वर्णन है।

८. अरुंगल चेप्पु (रत्नों की पिटारी) इस ग्रन्थ के रचयिता का नाम ज्ञात नहीं है। यह ग्रंथ श्री रत्नकरण्ड श्रावकाचार का तामिल अनुवाद ज्ञात होता है। इसकी एक प्राचीन टीका भी है।

महाकाव्य—

१. जीवक चिंतामणि २. सिलपदिकारम्, ३. वलयापथि, ४. मणिमेखलई, और ५. कुंडलकेशि इन पांच महाकाव्यों में आदि के तीन के कर्त्ता जैन और शेष के बौद्ध हैं।

१. जीवक चिन्तामणि—इस महाकाव्य के रचयिता श्री तिरु-तक्क देवर अनुमान १००० वर्ष पूर्व हुए थे। तामिल जनता में इस ग्रन्थ की अत्यधिक प्रसिद्धि है। इस कारण इसे केवल चिंतामणि नाम से ही संबोधित किया जाता है। डा० जी० यू० पोप के शब्दों में "This is on the whole, the greatest existing Tamil literary monument. The great romantic epic which is at once the Iliad and the Odyssey of the Tamil language, is one of the great epics of the world" "एक शब्द में यह ग्रंथ वर्तमान तामिल साहित्य की एक महान् यादगार है। यह अद्भुत महाकाव्य जिसे तामिल भाषा का ईलियड़ और औड़िसी (महाकवि होमर द्वारा रचित महाकाव्य)

कहना चाहिये, संसार के महान महाकाव्यों में से एक है।" विचारों की महत्ता, साहित्यिक मुहावरों के सुंदर प्रयोग और प्रकृति के सजीव चित्रण के संबंध में तामिल साहित्य का अन्य कोई भी ग्रन्थ इसका मुकाबला नहीं कर सकता। बाद में होने वाले ग्रन्थकारों ने केवल इसकी शैली का अनुकरण ही नहीं किया है, बल्कि उनकी सर्वदा ही यह उत्कट इच्छा रही है कि वे भी अपने इस आदर्श के अनुरूप ही लिख सकें। इस ग्रंथ के १३ अध्याय हैं जिनमें ३१४५ श्लोक हैं, जिनमें जीवक अथवा जीवंधर स्वामी के जीवन की, जन्म से लेकर निर्वाण तक की सम्पूर्ण घटनाओं का विस्तृत वर्णन है और इस पर प्रसिद्ध तामिल टीकाकार श्री नच्चीनारकिनीयार द्वारा लिखित एक सुंदर टीका भी है।

महान् विद्वानों में चिन्तामणि का कितना मान था इसका पता निम्न वृत्तान्त से लग सकता है, "तामिल भाषा की प्रसिद्ध रामायण के रचयिता महाकवि कम्बन जिस समय चोल नरेश के दरबार में एकत्र देश के प्रकाण्ड पंडितों के समक्ष उसका पारायण कर रहे थे उस समय एक विद्वान् ने उठ कर उनसे कहा "ग्रंथ में चिंतामणि के कुछ अंश हैं ऐसा ज्ञात होता है," महाकवि कम्बन ने विलक्षण मानसिक साहस एवं सत्यता पूर्वक इस ऋण को स्वीकार करते हुए कहा, "हाँ, चिंतामणि के अगाध साहित्यिक समुद्र में से मैं केवल एक चम्मच मात्र ही ले सका हूं।"

इस घटना का वर्णन स्वर्गीय दाक्षिणात्य कलानिधि महा महोध्याय श्री स्वामीनाथ ऐय्यर ने चिंतामणि (जिसमें नच्ची-

नार किणियार द्वारा लिखित प्राचीन टीका भी सम्मिलित है) के अपने विद्वत्तापूर्ण संस्करण की प्रस्तावना में किया है।

२. सिलप्पदिकारम्—इस ग्रंथ की रचना प्रथम शताब्दी में होने वाले चेर राजा सिंगुट् टुवन के भाई इलंगो वड़िगल ने की है। पुस्तक के नाम का अर्थ है 'नूपुर का महाकाव्य।' इस ग्रंथ का यह नामकरण इस महाकाव्य की नायिका कण्णकी के नूपुर के कारण हुआ है। संक्षिप्त में कथा इस प्रकार है:—कथा का नायक 'कोवलन' चोल साम्राज्य की राजधानी कावेरी-पूम-पट्टिनम् के एक जैन वणिक् का पुत्र था। उसका विवाह 'कण्णकी' नाम की एक अन्य धनाढ्य सेठ की कन्या से हुआ था। कुछ दिन तक दम्पति प्रसन्नता पूर्वक उनही के लिये निर्धारित एक विशाल अट्टालिका में रहते रहे। कालान्तर में कोवलन माधवी नामक एक नर्तकी के सौंदर्य पर मुग्ध होगया और उसके साथ रहने लगा। उसकी प्रसन्नता के लिए वह अपनी अतुल धन राशि व्यय कर रहा था जो धीरे २ क्षीण होती जारही थी। अन्त में माधवी को देने के लिये उसके पास उसका स्वयं का कुछ भी शेष न रहा। जब माधवी को यह ज्ञात हुवा कि अब कोवलन के पास उसे देने के लिये और धन नहीं है तो वह उसका तिरस्कार करने लगी। उसके इस व्यवहार परिवर्तन ने कोवलन की आंखें खोल दीं और उसे अपनी मूर्खता का आभास होने लगा। उसे अपनी सती और साध्वी पत्नी का ध्यान आया और वह लौट गया। उसके पास एक पाई भी नहीं थी और न उसमें इतना साहस था कि माता पिता से धन की याचना करे। उसकी स्त्री

ने यह कहकर उसे सांत्वना दी, "ये मेरे सोने के नूपुर हैं. तुम इन्हें बेच सकते हो और उससे जो धन प्राप्त हो उससे व्यवसाय कर सकते हो।" वे प्रच्छन्न रूप से नगर त्याग कर पाण्ड्य साम्राज्य की राजधानी मदुरा जाना चाहते थे। उन्हें एक धर्मपरायण जैन आर्यिका कवुंदी का मार्ग-दर्शन और संरक्षण प्राप्त होगया और वे उसके साथ साथ मदुरा चले गये। वहां कवुंदी ने कोवलन और उसकी स्त्री कण्णकी को एक ग्वालिन के संरक्षण में छोड़ दिया और आप एक जैन विहार में चली गई। दूसरे दिन प्रातः काल कोवलन अपनी स्त्री का नूपुर लेकर नगरी की ओर रवाना हुवा। मार्ग में उसे एक सुनार मिला जो राज महलों में नौकर था। उसने वह नूपुर उसे दिखलाया और पूछा "क्या आप इसे उचित मूल्य पर क्रय करने में कुछ सहायता कर सकते हैं?" सुनार धूर्त था। उसने पहिले ही रानी का एक नूपुर चुरा लिया था और उस पर राजा के अधिकारयों का संदेह था। उसे किसी भी क्षण बंदी होने का भय था और वह इस विचार में था कि यदि उसकी जांच होने लगे तो क्या करना? कोवलन को देखकर वह अत्यन्त प्रसन्न हुवा और उससे बोला, "आप कृपया यहां प्रतीक्षा कीजिये मैं एक अच्छा ग्राहक लेकर आता हूं।" कोवलन एक स्थान पर बैठ गया। सुनार सीधा महलों में गया और राजा को सूचित किया, "मैंने रानीजी के नूपुर को चुराकर लेजाने वाले का पता लगा लिया है और नूपुर उसके पास मौजूद है।" राजा ने बिना आगे पूछताछ किये अपने समीपस्थ सैनिकों को आदेश दिया, "इसके साथ जाओ, चोर को मार डालो और रानी का नूपुर ले आओ।"

ज्योंही सैनिकों ने, यह सुना वे धूर्त सुनार के साथ उस स्थान पर पहुँचे जहां कोवलन बैठा प्रतीक्षा कर रहा था और उन्होंने उस पर प्रहार किया और मार डाला।

उधर कण्णकी ने जो व्यग्रता पूर्वक अपने पति के पुनरागमन की बाट जोह रही थी अपने हृदय में एक विचित्र ही घटना घटने का अनुभव किया। दिन ढलता जा रहा था और कोवलन लौटा नहीं। वह उद्विग्न होने लगी। उसने लोगों को यह कानाफूंसी करते हुए सुना, 'कावेरी-पूम-पट्टिनम् से जो आदमी आया था वह बाजार में मार डाला गया।' उसके मुंह से एक जोर की आह निकल गई। वह नगर के बाजार की तरफ झपटी। वहां उसने अपने प्रिय पति को मृत पाया। उसने लोगों को यह कहते सुना कि यह परदेशी राजाज्ञा से मारा गया है। वह राजा के महल की ओर दौड़ी गई और वहां उसने राजा से मुलाकात करने की अनुमति मांगी जो तत्काल ही स्वीकृत होगई। उसने राजा से कहा, 'आपने मेरे पति को मार कर बड़ा अन्याय किया है।" राजा के सामने ही उसने प्रमाणित कर दिया कि उसका पति चोर नहीं था और उसके पास जो नूपुर था वह रानी का नहीं वरन् उसका था और नूपुर में रत्न भरे थे। उसने दोनों नूपुरों को तुड़वाया और राजा ने देखा कि रानी के नूपुर में मोती थे जब कि 'कण्णकी' के नूपुर में रत्न। इस घटना से राजा को बड़ा धक्का लगा और वह यह कहते हुए कि 'आह, क्या मैं राजा हूं?' सिंहासन से गिरपड़ा और मर गया। तत्पश्चात् कण्णकी उत्तेजित

अवस्था में महलों से बाहर निकली और अग्निदेव का आह्वान कर बोली, 'यदि मैं यथार्थ में शीलवती हूं तो मेरी प्रार्थना पूर्ण हो—स्त्रियों, बच्चों, धर्मात्माओं और रुग्ण पुरुषों को छोड़कर यह शैतान नगर जल जाय, सम्पूर्ण दुष्ट समाप्त हो जांय।" इस प्रकार कह कर उसने अपना बाम स्तन झटका मार कर उखाड़ डाला और नगर की ओर फेंक दिया। आश्चर्य! नगर जल उठा और अतिशीघ्र ही नष्ट हो गया। इस ही समय मदुरा की देवी कण्णकी के सम्मुख प्रकट हुई और बोली, "तुम्हारे पति की मृत्यु और तुम्हारी ये यातनाएं सब तुम लोगों के पूर्वोपार्जित कर्मों के फल हैं और तुम शीघ्र ही स्वर्ग में अपने पति से मिलोगी।"

नगर को जलता हुवा छोड़कर वह पश्चिम की तरफ चेर देश में चली गई और वहां एक पहाड़ी पर १५ दिन की तपश्चर्या के बाद स्वर्ग सिधार गई।

ग्रंथ के अध्ययन से तीन महत्त्वपूर्ण एवं मूल्यवान तथ्य प्राप्त होते हैं १–राजा के किंचित् भी न्याय मार्ग से च्युत हो जाने पर उसके अन्याय के कारण स्वयं उस पर और उसके राज्य पर महान् विपत्तियां आती हैं। २–शीलवती स्त्री केवल मनुष्यों द्वारा ही नहीं वरन् देवताओं और महात्माओं द्वारा भी भक्ति करने और पूजने योग्य है। ३–कर्म अनिवार्य रूप से अपना फल देते हैं और उसके परिणामों से फिर वह चाहे कोई भी क्यों न हो, बच नहीं सकता। और भविष्य में उन्हें भोगना पड़ता है। महाकाव्य की कथा का चोल, चेर और पाँड्य राज्यों से संबंध है और

उससे उस समय की तामिल जनता की सभ्यता, रहन सहन और रीति रिवाज आदि के संबंध में विस्तृत सूचनाएं प्राप्त होती हैं। ग्रंथ से उस समय की जैन जनता की समृद्धियों का भी पता लगता है। इस ग्रंथ की दो टीकाएं हैं।

३. वलयापथि—इसमें एक तामिल जैन राजकुमार की कथा है। यह ग्रंथ वर्तमान में कहीं भी प्राप्य नहीं है। कुछ तामिल टीकाओं से केवल इसके कुछ पद्य संग्रह किये गये हैं।

लघु काव्य—

पांचों ही लघु काव्य जैनों द्वारा लिखे हुए हैं।

१. चूलामणि—रचयिता—श्री तोलामुलिदेवर। ग्रंथकार विजयनगर साम्राज्य में कार्वेट नगर के राजा बिजय के दरबार में राजकवि थे। इसमें बारह सर्ग हैं, जिनमें २१३१ पद्य हैं। इस ग्रंथ में भगवान महावीर के पूर्व भव के जीव त्रिपृष्ठ वासुदेव के जीवन और उसके साहस पूर्ण कार्यों का विवरण है। बहुतसी बातों में इसकी समानता चिंतामणि से है और इसका रचना काल चिंतामणि से भी पूर्व का विश्वास किया जाता है।

२. नीलकेशी—इस ग्रंथ के निर्माता एक जैन दार्शनिक कवि हैं, जिनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं है। इसके दस अध्यायों में ८९४ श्लोक हैं। कथा की नायिका नीलकेशी एक देवी है जो एक स्थान से दूसरे स्थान में भ्रमण करती रहती है और धार्मिक उपदेशकों से मिलकर उन्हें दार्शनिक चर्चाओं में लगाए रहती है और अन्त में उन्हें वाद में परास्त करती है। ग्रंथ के प्रथम

अध्याय में मुनिचंद्र नामक जैन साधु द्वारा नीलकेशी को दी गई जैन धर्म की शिक्षाओं का वर्णन है। २ से ५ तक के अध्यायों में बौद्ध दर्शन के विभिन्न व्याख्याताओं के साथ नीलकेशी का जो वादविवाद हुवा उसे समझाया गया है। शेष के पांच अध्यायों में नीलकेशी का आजीवकों, सांख्यों, वैशेषिकों, वैदिक धर्मानुयायियों और प्रकृतिवादियों के साथ शास्त्रार्थ है। प्रो० ए० चक्रवर्ती के शब्दों में "नीलकेशी मुख्यतः एक ऐसा तार्किक ग्रंथ है जिससे भौतिकवाद के विरुद्ध आध्यात्मवाद की वास्तविकता, वैदिक क्रिया-काण्ड के विरुद्ध अहिंसा का महत्त्व एवं बौद्धों, जो अहिंसा का उपदेश तो देते हैं किन्तु हिंसा का कार्य करते हैं, के विरुद्ध निरामिष भोजन की पवित्रता प्रमाणित होती है" इस ग्रंथ पर वामनमुनि अपरनाम मल्लिषेण द्वारा विरचित 'समय-दिवाकरम्' नामकी एक अत्यन्त ही सुंदर और उपयोगी टीका है।

३. यशोधर काव्यम्—एक अज्ञात जैनाचार्य द्वारा निर्मित इस ग्रन्थ में राजा यशोधर और उसकी माता चन्द्रमती की कथा है। इनको कालीदेवी के आगे चांवल चूर्ण से निर्मित पशु का बलिदान करने के कारण मनुष्य, पशु, पक्षी आदि कई योनियों में जन्म धारण कर अनेक आपदाओं का सामना करना पड़ा था। जिस समय विस्तृत परिमाण में अहिंसा के सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया जारहा था और जिस समय जैन वैदिक यज्ञों में पशुबलि का पूरी शक्ति से विरोध कर रहे थे उस समय महान् हिन्दू क्रांतिकारी एवं द्वैत दर्शन के संस्थापक श्री मध्वाचार्य ने इस प्रथा में एक सुधार किया था। उसने कहा था कि यज्ञ में वास्तविक पशुओं

के स्थान में पिष्ट पशुओं का प्रयोग किया जा सकता है। यशोधर की इस कथा का निर्माण प्रत्यक्षतः क्रियाकाण्ड और इस स्थानापन्नता के विरोध के लिये हुवा है। आचरण का वास्तविक मूल्य मन, वचन और कर्म की एकता पर निर्भर है। क्रियाकाण्ड के इस संशोधित विधान में यद्यपि हिंसा की वास्तविक क्रिया का निवारण किया गया है तथापि इसके साथ शेष दो, मन और वचन की एकता का अभाव है। पशुबलि की इच्छा और आवश्यक मंत्रों के उच्चारण के कारण पशुबलि के लिये पिष्टपशु का स्थानापन्नत्व हिंसा के उत्तरदायित्व से मुक्त नहीं करता। कथानक का मुख्य उद्देश्य इस संशोधित क्रियाकाण्ड का विरोध करना ही मालूम होता है जिसमें प्रसंगवश जैन धर्म की अन्य मान्यताओं का भी विवेचन किया गया है। अतः इस ग्रंथ का रचना काल माध्वदर्शन के संस्थापक द्वारा वैदिक क्रियाकाण्डों में सुधार के बाद का होना चाहिये।

४. उदयनकुमार काव्यम्—रचयिता अज्ञात। इसमें कौशाम्बी नरेश उदयन की जीवन कथा है।

५. नागकुमार काव्यम्—अभी प्रकाशित नहीं हुवा।

अन्य उच्चकोटि की साहित्यिक कविताएं

१. मेरुमंदरपुराणम्—रचयिता वामन मुनि। इस ग्रंथ में श्री विमलनाथ तीर्थङ्कर के दो गणधर मेरु और मंदर के पूर्वभवों का वर्णन है। इस ग्रन्थ में सुन्दर तामिल में जैन दर्शन, आचार, और लोकानुयोग का बड़ा ही सुन्दर विवेचन है। समवशरण का

वर्णन भी अत्यन्त सुन्दर है। कर्म के कार्यों की वर्णन शैली बड़ी ही प्रभावक और शिक्षाप्रद है। कर्मों की शक्ति पर पर्याप्त प्रकाश डाला गया है। तामिल भाषा के विद्वानों के लिए भी यह ग्रन्थ बड़ा महत्वपूर्ण और लाभदायक है क्योंकि इसमें संस्कृत और प्राकृत से आकर तामिल भाषा के रूप में प्रयोग होने वाले शब्दों का खजाना है। तामिल जैन जनता में इस ग्रन्थ का बड़ा मान है क्योंकि इसे भवरोग मंत्र अर्थात् आत्मा को जीवन मरण से छुड़ाने वाला पवित्र मंत्र कहा जाता है और यह उचित ही है।

२. पेरुंकथई—यह ग्रंथ गुणाढ्य की वृहत्कथा में वर्णित कौशाम्बी नरेश राजा उदयन की जीवनी और उसके पराक्रम पूर्ण कार्यों का तामिल अनुवाद है। अनुवाद कोयम्बटोर में विजय मंगलम् नामक स्थान के कुंगवेल नामक जैन राजकुमार ने किया है। यह ग्रंथ साहित्यिक सौंदर्य और काव्य प्रतिभा का खजाना है। सुप्रसिद्ध तामिल टीकाकारों ने प्रायः व्याकरण संबंधी एवं मुहावरेदार प्रयोगों को स्पष्ट करने के लिये इस ग्रन्थ के उद्धरण दिये हैं।

संग्रह ग्रन्थ

निम्न पुस्तकों में जैन और अजैन लेखकों द्वारा लिखित कविताओं का संग्रह है।

१. पत्तुपाट्ट—ग्राम्यजीवन को चित्रित करने वाली १० कविताओं का संग्रह।

२. पुरनानूरु—युद्ध, यात्रा आदि गृहबाह्य कार्यों पर ४०० कविताएं।

३. अहनानूरु–प्रेम, विवाह एवं गार्हस्थिक जीवन पर ४०० कविताएं।

४. नट्रीणई ५. कुरुंतोगई. ६. ऐं गुरुनूरु, ७. पदिट्रु पत्त ८. परिपाड़ल ९ कलित्तोगई।

इन पुस्तकों से हमें भूमि की विभिन्न जातियों, ग्राम्यजीवन, जनता के रहन सहन और रीति रिवाज, उनके लोकगीत, उनके साहसिक कार्य, उनके व्यवसाय और मान्यताएं आदि की विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है।

इन संग्रहों में, जिनमें से कई तो दो सहस्र वर्ष से भी अधिक प्राचीन हैं, हमें जैनों की कुछ मुख्य शिक्षाओं और धार्मिक क्रिया-कलापों के उद्धरण प्राप्त होते हैं। पौधों और वृक्षों के समान एकेन्द्रिय जीवों के प्रति भी हमें विचारवान् होना चाहिये, इसका निम्न घटना द्वारा बड़ा ही सजीव चित्रण चित्रित किया गया है। एक राजपुत्र जो अपने दयालु स्वभाव के कारण प्रसिद्ध था, एक दिन अपने मित्रों के साथ उद्यान में प्रातःकाल वन क्रीडा के अर्थ गया था। उसने अपना रथ एक वृक्ष के समीप छोड दिया जिस पर 'मुल्लै' (चमेली) की लता उगी हुई थी। संध्या को जब वह अपने रथ के निकट लौटा तो उसने देखा कि उसके रथ के पहिये के चारों ओर कुछ लताएं हवा के कारण एकत्र होगई हैं। उन कोमल लताओं को आघात न पहुँचे, इस भावना से प्रेरित होकर उसने अपना रथ उनके आश्रय के लिये वहां ही छोड दिया।

जैन धर्म की शिक्षा है कि सब मनुष्य भाई भाई हैं। एक कवि ने अपने निवासस्थान और संबन्धियों के संबंध में प्रश्न किये जाने पर इस भावना को व्यक्त किया है। उसने कहा है, "यादुम ऊरे यावरुम केलिर अर्थात् प्रत्येक स्थान मेरा निवासस्थान है और सब मनुष्य मेरे संबंधी हैं।"

इन संग्रहों में से एक में 'लौंच' (जैन सन्तों द्वारा अपने सिर के बालों का लुंचन करना) का भी वर्णन है।

भगवान समन्तभद्र की जन्म भूमि उरैयूर अथवा उरगपुरी के शासक चोल नरेश श्री कोप्परुं-चोलन द्वारा सल्लेखना अथवा समाधिमरण (मृत्यु के अत्यधिक निकट और निश्चित होने की अवस्था में अनशन द्वारा शरीरत्याग) धारण किये जाने का भी उल्लेख पाया जाता है।

१०. जिनेन्द्र मालई—ज्योतिष ग्रंथ। बहुधा इस ग्रंथ के उद्धरण प्रमाण रूप में तामिल देश के ज्योतिर्विद्या विशारदों द्वारा दिये जाते हैं।

११. तिरु-नूट्रु-अंधादि। रचयिता अविरोधी आलवार। इसमें मइलापुर के भगवान नेमिनाथ की प्रशंसा में १०० स्तोत्र हैं। प्रत्येक पद का प्रारंभ पूर्व पद के अंतिम शब्द से होता है।

१२. तिरुक्कलम्बकम्-रचयिता उड़ीचि देवर। इस पुस्तक में भगवान जिनेन्द्र देवकी प्रशंसा में विभिन्न प्रकार के विभिन्न छंदों में विभिन्न परिणाम के १०० पद्य हैं।

इनके अतिरिक्त और भी बहुत से छोटे और बड़े प्रकाशित और अप्रकाशित ग्रंथ हैं।

मणि प्रवाल पद्धति के ग्रंथ—

(संस्कृत और तामिल पद्य का सम्मिश्रण)

१. श्रीपुराणम्—इसमें ६३ शलाका पुरुषों का आकर्षक वर्णन है। ग्रंथ की शैली इतनी आकर्षक है कि इसके बाद के ब्राह्मण विद्वानों ने उपनिषदों, गीता एवं ब्रह्म सूत्रों की टीका करने के लिये इसे अपनाया है और इसका निकटतम अनुकरण किया है।

२. पदार्थ सारम्-नव पदार्थ (सात तत्त्व, पुण्य और पाप) पर विस्तृत ग्रंथ।

३. अष्ट पदार्थम्-आप्त, आगम, गुरु, लिंग आदि आठ तत्त्वों का विस्तृत विवेचन।

४. जीव संबोधनई-द्वादश अनुप्रेक्षाओं पर आकर्षक पुस्तक।

धार्मिक वैमनस्य के कारण दक्षिण भारत के जैनियों को अत्यधिक हानि उठानी पड़ी है। उनकी संख्या, शक्ति, संपत्ति, मंदिर एवं साहित्य ग्रंथ नष्ट कर दिये गये। किन्तु जो कुछ भी शेष है वह अब भी विश्व को जैन धर्म की महानता और उसके संसर्ग में आने वालों पर होने वाले लाभप्रद प्रभाव को बतलाने के लिये पर्याप्त है।

जैनियों के उच्च चारित्र, गंभीर पांडित्य एवं उनकी उत्तमोत्तम सेवाओं का तामिल जनता पर इतना अधिक स्थायी प्रभाव पड़ा है कि धार्मिक उपद्रवों के बाद भी अजैन विद्वान् आदरणीय शब्दों

के साथ उनके उद्धरण देते रहे हैं। नच्चीनार किणीयार, आडियार्क-नल्लार जैसे महान् टीकाकारों ने भी उनका इन शब्दों में स्मरण किया है-महान् एवं उत्तम ग्रंथकार, परम धार्मिक, चारित्रवान्, ज्ञानवान शिक्षक, अहिंसा के उपासक उच्च विचारक आदि।

एक महान् अजैन कविने जैनियों की स्थिति का वास्तविक चित्रण करते समय निम्न शब्दों में अपना शोक प्रकट किया है—

"अहिंसा व्रत के धारी ये लोग,
धर्मपरायण एवं विवेकी जन
तामिल सौंदर्य के जो केवल एकाकी ही पारखी हैं
और जो कला विज्ञान और साहित्य के महान् शिक्षक हैं
अफ़सोस! आज वे समय की गति के कारण नीचे गिर गये हैं।"

जैनों का कर्तव्य है कि जो कुछ शेष है उसकी रक्षा करें। उन्हें चाहिये कि—

(१) वे हस्तलिखित ग्रंथों की पर्याप्त खोज करें और उन्हें एकत्र करें।

(२) अजैनों द्वारा जो ग्रंथ अशुद्धियों, परिवर्तनों परिवर्धनों, एवं परित्यागों के साथ प्रकाशित किये गये हैं उन्हें शुद्ध रूप में पुनः प्रकाशित करें।

(३) सम्पूर्ण अप्रकाशित ग्रंथों का सावधानता पूर्वक सम्पादन कराकर प्रकाशन करें।

(४) महत्वपूर्ण ग्रंथों का अनुवाद हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषा में करा उन्हें बिना किसी अशुद्धि के आकर्षक रूप में मुद्रित करावें।

तामिल जैन साहित्य के संबंध में कुछ विद्वानों के विचार—

पचइयप्पा कालेज कांचीपुरम् के प्रोफेसर श्री० सी० एस० श्रीनिवासाचारी एम० ए० लिखते हैं:—

'प्राचीन तामिल और कर्नाटक प्रांतों में तामिल और कन्नड साहित्य की अभिवृद्धि में जैन विद्वानों का महत्त्वपूर्ण हाथ रहा है। उन द्वारा लिखित एवं संग्रहीत कोष, व्याकरण एवं अन्य विषयों पर अपरिमित सर्वाधिक मूल्यवान एवं उच्चकोटि के ग्रंथ हैं। वर्तमान में केवल उनका कुछ अंश ही शेष है किन्तु जितना भी शेष है वह अपनी श्रेणी का अद्भुत, अत्यधिक संतोषप्रद है और वह शताब्दियों तक तामिल भाषा के क्रमिक विकास का आधारभूत तत्त्व रहा है।"

× × ×

'प्राचीन भारत' नामक पुस्तक के पृष्ठ ६६ पर प्रो० ई० जे० रापसन का कथन है—

"दक्षिण भारत की संस्कृति में भी उनका (जैनियों का) महत्त्वपूर्ण भाग रहा है। तामिल और कन्नड भाषा की प्रारंभिक साहित्यिक उन्नति का अधिकांश श्रेय जैन संतों के परिश्रम को है।"

× × ×

मद्रास विश्वविद्यालय के तामिल विभाग के भूतपूर्व प्रधान श्री एस० वैय्यापुरी पिल्लई बी० ए० बी० एल० लिखते हैं—

"जहां तक तामिल प्रदेश का संबंध है हम कह सकते हैं कि जैन लोग संस्कृति एवं ज्ञान के वास्तविक देवदूत थे। जहां कहीं भी वे गये उन्होंने वहां की जनभाषा का अध्ययन किया और अपने

विशाल अध्ययन एवं अध्यवसाय के कारण उन्होंने उन कई भाषाओं पर अधिकार कर लिया जिनके कि सम्पर्क में वे आए। उनके पवित्रतम जीवन ने उन्हें इस निमित्त हार्दिक इच्छा के साथ निरन्तर प्रयत्न करने में पर्याप्त सहायता प्रदान की। उनके विचार संकीर्ण नहीं थे। न्याय, गणित, ज्योतिष एवं अन्यान्य विषयों का उन्होंने बड़ी लगन के साथ अध्ययन किया था। अनुमानतः व्याकरण उनका प्रिय विषय था। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि उन्होंने तामिल पर अधिकार कर लिया और तामिल देश की सम्पूर्ण सांस्कृतिक एवं साहित्यिक हलन चलन में नेतृत्व पूर्व भाग लेना प्रारंभ किया।"

× × ×

मद्रास विश्वविद्यालय, मद्रास के तामिल भाषा के सीनियर लेक्चरार, श्री एम० ए० दोरई रंगस्वामी लिखते हैं—

"यदि मैं भारतीय संस्कृति और साहित्य एवं प्रधानतः तामिल साहित्य और संस्कृति के प्रति जैनियों की देन के संबंध में संक्षेप में कुछ कहना चाहूं तो यह कह सकता हूं कि भारत और अन्यत्र संस्कृति और साहित्य के लिये पाश्चात्य मिशन द्वारा जो कुछ आज किया जा रहा है वह ही जैन लोग आज से पूर्व भारत में उनके निमित्त कर रहे थे।

'व्याकरण, जिसे साहित्य और भाषा का विज्ञान कहते हैं, का अस्तित्व जैनियों के कारण ही है। यद्यपि इस संबंध में मतैक्य नहीं है तथापि तामिल भाषा का सर्व प्रथम और सर्व प्राचीन ग्रंथ तुल्काप्पियम् भी उनकी ही रचना कही जाती है।

"जहां तक शब्दकोषों का संबंध है, उनमें से जो पद्य में हैं वे सब उनकी रचनाएं हैं।

"साहित्य क्षेत्र के संगम काल के कुछ ग्रंथ, महाकाव्यों का अत्यधिक प्रतिशत, न्याय विषयक प्रायः सम्पूर्ण रचनाएं एवं सम्पूर्ण लघु काव्य उनकी ही सम्पदा है।

'अपने अत्युच्च नैतिक महात्म्य के कारण सर्व प्रिय स्वधर्म प्रसार के निजी उद्देश्य के अतिरिक्त उन्होंने अपने साहित्य, शिक्षा एवं सदुपदेशों द्वारा तामिल जनता के नैतिक धरातल को ऊंचा उठाने में जो प्रयत्न किया है उसके लिय भी हमें उनका कृतज्ञ होना चाहिये।"

× × ×

श्री टी. पी. मीनाक्षी सुन्दरम् एम. ए. बी. एल. एम. ओ. एल (भूतपूर्व) प्रधान तामिल विभाग, अन्नामलइ विश्वविद्यालय; अन्नामलइ नगर लिखते हैं—

"तामिल संस्कृति पर जैनधर्म के इतिहास में अत्यन्त आदि काल से ही जैनों का प्रभाव प्रारम्भ होगया होगा। परम्परा से यह सिद्ध है कि महान् चन्द्रगुप्त मौर्य ने संसार का परित्याग कर श्रवण बेलगोला में, जिसे अब मैसूर कहते हैं और जो प्राचीन तामिल देश में 'एरुमइनाडु' के नाम से विख्यात था रहने के लिये चला गया था। व्याकरण, गद्य एवं पद्य विषयों पर वर्तमान में प्राप्त सर्वाधिक प्राचीन ग्रथ 'तोल्काप्पियम्' और विशेषतः उसका वह अंश जिसमें जीवों के उनकी इन्द्रियों की संख्या के अनुसार

भेद किये गये हैं इस दीर्घकालीन प्रभाव का यथेष्ट साक्षी है। लौंच (जैन मुनियों द्वारा अपने सिर के केशों का लुञ्चन करना) जैनों का एक धार्मिक संस्कार है। संगम काल के कवियों में श्री उलोचनार नामक एक कवि हुए हैं जो निःसंदेह जैन सन्त थे। इन द्वारा लिखित ग्रंथों ने वर्तमान में ज्ञात सर्व प्राचीन तामिल साहित्य का निर्माण किया है। तामिल देश के सर्व प्रथम ज्ञात महाकाव्य 'सिलप्पदिकारम्' में एक जैन आर्यिका द्वारा जैन धर्म के सिद्धान्तों की बड़े ही स्पष्ट रूप से शिक्षा देने का कलामय वर्णन है। वर्तमान काव्य निर्माण कला का आदि स्रोत एक अन्य अनुपम महाकाव्य 'चिन्तामणि' है जिसे सब ही लोग जैन महाकाव्य मानते हैं। तामिल जनता को अपनी जिन नैतिक कविताओं और आचार शास्त्र के बहुत से ग्रंथों पर गर्व है और जिनकी गूंज आज भी तामिल देश के आबाल वृद्ध के कानों में सुनाई देती है वे जैन सन्तों और विद्वानों की लेखनी द्वारा लिखे गये हैं। इनके बाद में होने वाले श्री अविनयनार, गुणसागर, अमुदसागर और भवनंदि द्वारा लिखित ग्रंथों ने वर्तमान वैयाकरणों की तामिल भाषा के वर्ण विन्यास, शब्द व्युत्पत्ति एवं गद्य संबंधी बहुतसी कठिनाइयों को अपनी चिरस्मरणीय छोटी २ कविताओं द्वारा, जो अब भी इन विषयों के अध्ययनशील विद्यार्थियों में प्रसिद्ध हैं सरल कर दिया है। नवीन विचारधारा के वे सब नेता, जिन्होंने 'तोल्काप्पियम्' की प्रच्छन्न महानता को अपनी टीकाओं द्वारा प्रज्वलित करने का प्रयत्न किया, जैन थे। ये लोग बच्चों के शिक्षक होने के कारण उनकी कठिनाइयों और उनके हल करने

का मार्ग जानते थे। हिन्दुओं ने प्रायः जैन धर्म और जैन संस्कृति की सर्वोत्तम मान्यताओं को अपना लिया है किन्तु इसमें पूर्ण सन्देह है कि उन्होंने उनकी महत्ताओं का वास्तविक मूल्यांकन किया हो। तामिल देश के दक्षिण क्षितिज पर दार्शनिक नक्षत्रों की महान् प्रतिष्ठा होते हुए भी यह संदेहास्पद है कि उन्होंने स्याद्वाद, अपेक्षावाद के दार्शनिक सिद्धान्त के वास्तविक अभिप्राय को अब तक भी समझकर हृदयंगम किया हो। एक अन्य जैन ग्रन्थ है 'नीलकेशी'। इसके पढ़ने से ज्ञात होता है कि किस प्रकार महाकाव्य के धरातल पर दार्शनिक विवेचनाओं की उत्पत्ति की जा सकती है। इसमें किञ्चित् भी संदेह नहीं कि विश्वसाहित्य के विभिन्न अंगों को वास्तव में इस ग्रन्थ ने बहुत कुछ दिया है। वैयाकरणों, महाकाव्य निर्माताओं. नैतिक ग्रन्थों के लेखकों, दार्शनिकों, छोटे बच्चों के शिक्षकों, सामाजिक कार्यकर्ताओं और इनसे भी ऊपर 'सित्तन्नवासल' के शिल्पियों एवं कलाकारों के रूप में, जिनका अनुकरण दक्षिण भारत के अन्य मंदिरों के निर्माण में किया गया है, संक्षेप में तामिल संस्कृति, साहित्य और समाज के प्रत्येक अंग में तामिल जीवन की प्रत्येक दिशा में जैनों की अमिट छाप है। गत एक सहस्र वर्ष तक उनका यह प्रभाव अविदित रहा। किन्तु प्रो० चक्रवर्ति और कुछ सहृदय तामिल जैनों को धन्यवाद है कि जिनके प्रयत्नों से तामिल देश की प्रतिष्ठित एवं कृतज्ञ जनता द्वारा जैन धर्म और उसकी शिक्षाओं को समझने और उनकी प्रतिष्ठा किये जाने का प्रत्यन किया जाने लगा है।"

तामिल विद्वान् और देश भक्त पत्र के भूतपूर्व सम्पादक श्री टी. वी. कल्याण सुन्दर मुदालियर का कथन है:—

"अपने अनुभव के आधार पर मैं कहता हूं कि जब हम श्रमण साहित्य का अनुसंधान करते हैं तो हमें बहुत सी अनुपम कृतियां प्राप्त होती हैं।"

मि० अलफ्रेड मास्टर, सी० आई० ई० भूतपूर्व आई० सी० एस० का कथन है:—

"दक्षिण भारत में भी संस्कृतेतर स्थानीय साहित्य का निर्माण जैनों के कारण ही हुवा था। तामिल कुरल्, नीति संबंधी दोहे, नालड़िनानूरु अथवा ४०० नीति संबंधी चौपदे और जीवक चिन्तामणि महाकाव्य जैनों की ही रचनाएं हैं।"

महाराजाज कालेज, विजयानागरम् के इतिहास के प्रोफेसर श्री एम० एस० रामास्वामी आयंगर एम० ए० का कथन है:—

"तामिल जनता की सम्पत्ति के अधिकांश भाग का निर्माण जैनों द्वारा रचित तामिल भाषा के ग्रंथों से हुआ है।"

ई० थर्सटन, सी० आई० ई० भूतपूर्व अध्यक्ष गवर्नमेंट म्यूजियम मद्रास लिखते हैं:—

'तामिल जैनों ने व्याकरण, महाकाव्य, नीति विज्ञान, ज्योतिष, खगोल, गणित एवं आयुर्वेद के बहुत से मौलिक ग्रंथों का निर्माण किया है। उनकी रचनाएं प्रमाण एवं आधारभूत गिनी जाती हैं।"

श्री महावीर ग्रन्थमाला के सर्वोपयोगी प्रकाशन—

(१) आमेर शास्त्रभंडार जयपुर की ग्रन्थ सूची—

आमेर शास्त्र भण्डार जयपुर एवं महावीर शास्त्र भण्डार श्री महावीरजी के २५०० से अधिक ग्रन्थों का सविवरण परिचय। मू० ५) संपादकः—श्री कस्तूरचन्द कासलीवाल एम. ए., शास्त्री।

(२) प्रशस्ति-संग्रह—

आमेर शास्त्र भंडार जयपुर के संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश एवं हिन्दी भाषा के ग्रन्थों की ग्रन्थ तथा लेखक-प्रशस्तियों का अपूर्व संग्रह। मूल्य ६) —सं० श्री कस्तूरचन्द कासलीवाल एम. ए., शास्त्री।

(३) Jainism-A Key to True Happiness

By Brahmachari Shital Prasadji. Price Rs. 1/-

मिलने का पता—

मंत्री—प्रबंध कारिणी कमेटी

श्री दि० जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी

महावीर पार्क रोड, जयपुर।